

अभिरुचि-सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण का विश्लेषणात्मक अध्ययन

श्वेता तिवारी

(शिक्षाशास्त्र)

शिक्षक-शिक्षा संकाय, नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र (माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिरुचि, अभिप्रेरणा एवं मूल्य का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन) में से शोध पत्र हेतु अभिरुचि चर का चयन कर उससे सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण का विश्लेषणात्मक अध्ययन पर आधारित है। इस अध्ययन का उद्देश्य अभिरुचि क्या है, किसे कहते हैं और इससे सम्बन्धित किये गये शोध कार्य के निष्कर्ष की जानकारी हासिल करना है। जिससे शोधकर्ता अभिरुचि (चर) के सन्दर्भ सम्पूर्ण एवं विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सके और ज्ञानार्जन कर अभिरुचि क्षेत्र में और क्या-क्या परिवर्तन लाये जा सकते हैं उस पर अध्ययन किया जा सके। प्रस्तुत शोध पत्र से सम्बन्धित साहित्यों, लेखों, पत्र-पत्रिकाओं, शोध कार्यों आदि के विवरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

Keywords : माध्यमिक स्तर, अभिरुचि, साहित्य सर्वेक्षण, विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रस्तावना :

व्यक्ति और समाज का विकास शिक्षा द्वारा ही होता है शिक्षा ही एक ऐसा साधन है जो मनुष्य और पूरी दुनिया के बीच समन्वय स्थापित करती है और साथ ही व्यक्ति की आन्तरिक शक्तियों का विकास भी करती है जिससे उसके ज्ञान में वृद्धि होती है और इस एकत्रित ज्ञान का लाभ अनुसंधान में मिलता है क्योंकि शोध कार्यों द्वारा प्रस्तावित अध्ययन से, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप

से, सम्बन्धित समस्याओं पर पहले किये गये कार्य से बिना जोड़े, स्वतंत्र रूप से शोधकार्य नहीं हो सकता। सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा से शोधकर्ता अनुसंधान प्रक्रिया को समझता है और उसे यह ज्ञान होता है कि अध्ययन किस प्रकार करना है। पहले किये गये शोध की जानकारी मिलती है जो सफल व उपयोगी रहे, उनके द्वारा किये गये कार्यों से पूर्व परिचित हो जाता है और फिर वह अपने उद्देश्यों को स्पष्ट व संक्षिप्त विश्लेषण कर सकता है। किसी भी शोध विषय को चुनने से पहले यह आवश्यक है कि उससे सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन कर लिया जाये तभी शोधकर्ता उस विषय के क्षेत्र में किये कार्य की, विधि, निष्कर्ष को समझ पायेगा और अपनी समस्या का निर्धारण, रूपरेखा तैयार कर कार्य को सम्पन्न कर सकता है। डब्ल्यू०आर० बॉर्ग के अनुसार “किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान है जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित होता है। यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते तो हमारे कार्य को प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की सम्भावना है अथवा यह पुनरावृत्त भी हो सकता है।”

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि किसी भी क्षेत्र में शोध साहित्य का सर्वेक्षण यह दर्शाती है कि इस विषय की समस्यायें क्या हैं, निष्कर्ष क्या प्राप्त हुए पता चलता है। इसकी सहायता से परिकल्पनाओं का निर्माण, मापन की विधियां एवं उसकी वस्तुनिष्ठता कैसे मापी जाये जानकारी प्राप्त हो जाती है। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण, चुनौतीपूर्ण, तर्कपूर्ण एवं एक शोधार्थी के लिए रूचिकर भी है जो उसके शोध कार्यों में सहायता करती है।

शिक्षा के क्षेत्र में अभिरूचि का अत्यन्त महत्व है, क्योंकि अभिरूचि ही है जिसमें विद्यालय हो या कालेज या कोई भी क्षेत्र में अभिरूचि का महत्वपूर्ण स्थान है। जब बालक—बालिका किसी विषय में अभिरूचि रखते हैं तो वे उस विषय को मन से पढ़ते हैं, और शिक्षा के प्रति उत्साहित रहते हैं, हर प्रकार की कठिनाई के लिए तैयार रहते हैं, लेकिन जब इसके विपरीत उसकी अभिरूचि पढ़ाई में नहीं होती, शिक्षा के प्रति जागरूक नहीं होते फलस्वरूप कक्षा ऊबाऊ लगती है। अतः अभिरूचि बालक—बालिका के शैक्षिक उपलब्धि विकास को सहज, सरल व स्वाभाविक बनाने में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने 400 विद्यार्थियों पर अध्ययन करने का उद्देश्य रखा गया है जो माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक-बालिका हैं। जिसके अध्ययन हेतु शोधकर्ता ने अपने प्रस्तावित शोध के अभिरुचि (चर) में सम्बन्धित साहित्यों का अध्ययन किया है।

मिश्रा, एस0 (1998) ने कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर से माध्यमिक स्तर के विभिन्न सामाजिक, आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले छात्र-छात्राओं की शैक्षिक अभिरुचि मध्यम निम्न सामाजिक- आर्थिक स्तर वाले छात्र-छात्राओं से अधिक पायी गयी।

श्रीवास्तव, ज्योति (2000), ने पारिवारिक वातावरण व किशोरों की शैक्षिक रुचि एवं आकांक्षा स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का एक अध्ययन किया जिसमें उन्होंने पाया कि किशोरों की शैक्षिक रुचि पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव पाया जाता है। उच्च शिक्षित परिवार के किशोरों में निम्न शिक्षित परिवार के किशोरों की अपेक्षा उच्च शैक्षिक रुचि पायी गयी।

तिवारी अनूप (2007), ने अपने अध्ययन में ग्रामीण क्षेत्र के इण्टरमीडिएट के छात्रों में व्यावसायिक अभिरुचि का अध्ययन किया। यह विषय एम0एड0 लघुशोध हेतु अवध विश्वविद्यालय, फर्रुखाबाद से सम्पादित किया गया जिसके निष्कर्ष निम्नवत हैं: –

(अ) ग्रामीण क्षेत्र के इण्टरमीडिएट छात्रों की नौकरी एवं व्यापार की अभिरुचि में सार्थक अन्तर है।

(ब) इण्टरमीडिएट के कला वर्ग के छात्रों की नौकरी के प्रति व्यापार की अपेक्षा अभिरुचि अधिक है।

(स) इण्टरमीडिएट के विज्ञान वर्ग के छात्रों के अन्दर व्यावसायिक अभिरुचि कम पायी जाती है।

भोजकर एवं मेहता (2007), ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन किया और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि सभी लड़के एवं लड़कियों ने वाह्य प्रयोगात्मक और सामाजिक सेवा को वरीयता दी। कला की छात्राओं की तुलना में विज्ञान की छात्राओं ने समाज सेवा में विशेष रुचि ली। व्यावसायिक रुचि में कला एवं विज्ञान के क्षेत्रों में अन्तर पाया गया।

इस तरह पूर्व में किये गये अनुसंधान वर्तमान शोध के लिए एक आधारशिला का कार्य करते हैं। सम्बन्धित साहित्य का भिन्न-भिन्न प्रकार से विश्लेषणात्मक अध्ययन कर ऐसे निष्कर्षों को उजागर करना जिनकी वर्तमान या भविष्य में शोध कार्य करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

विभिन्न प्रकार के विभिन्न शोध साहित्य के विश्लेषणात्मक अध्ययन कर इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि अभिरूचि का विद्यार्थी जीवन में अहम योगदान होता है। जिसमें परिवार, शिक्षक, समाज का बहुत योगदान होता है। अभिरूचि बालक की आर्थिक, सामाजिक, व शैक्षिक पृष्ठभूमि को प्रभावित करती है। इससे यह भी पता लगता है कि बालक किस विषय में अधिक रुचि रख रहा है, इसके पता लगने पर बालक को सही दिशा-निर्देश देकर व भावी जीवन में क्या कर सकता है, सहायता कही जा सकती है। जिससे वह अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर सके जिसमें अभिरूचि का महत्वपूर्ण स्थान होता है। अतः शोधकर्ता ने अभिरूचि (चर) के रूप में उसके विभिन्न कारकों को अध्ययन के लिए चुना है जिसके मापन से बालकों की किस विषय के प्रति अभिरूचि है पता लगाया जा सकता है और किस प्रकार से शैक्षिक उपलब्धि निर्धारित होगी, पता लगाया जा सकता है। क्योंकि अभिरूचि मानव व्यक्तित्व की एक महत्वपूर्ण विधा है। शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन व परामर्श के कार्य में अभिरूचि का अत्यन्त महत्व है। जिसके मापन हेतु अवलोकन, साक्षात्कार, प्रश्नावली, उपलब्धि परीक्षण तथा रुचि सूचियों का प्रयोग किया जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- पारसनाथ राय, सी०पी० राय, अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
- गुप्ता, एस०पी०, उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- गुप्ता, एस०पी० सांख्यिकीय विधियां, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- शैक्षिक अनुसंधान प्रणाली एवं सांख्यिकी, Lovely Professional University
- डा० राहुल, पी०एच०डी०, समाजशास्त्र, जनरल, I SRJ
- सोनाली तिवारी, ग्लोबल जर्नल फॉर रिसर्च एनालिसिस